Deg-2
Hist(H) P-III

दिल्ली सल्तनत का क्षेत्रीय विस्तार
(1328 ई० तक)

सन् 1206 ई० में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद 85 वर्षों तक एक के बाद एक कई सुल्तानों को सल्तनत का क्षेत्रीय विस्तार करने के बजाय सल्तनत के विखंडन को रोकने के लिए कठिन संघर्ष करते रहना पड़ा। इसके मूल में कई कारण निहित थे, जैसे- दिल्ली में सत्ता के लिए संघर्ष, कई तुर्क अमीरों द्वारा स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के प्रयास, मंगोलों के आक्रमण एवं सत्ताच्युत हिन्दू राजाओं द्वारा अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त करने के प्रयास आदि। किन्तु सत्ता में खिलजियों के आने तथा अधिकारियों, प्रशासकों एवं सैनिकों के रूप में तुर्कों के अतिरिक्त अन्य तत्वों यानी भारतीय मुसलमानों और हिन्दुओं को नियुक्त करने में ~~सल्तनत~~ सल्तनत द्वारा उदार नीति अपनाने एवं प्रशासन के आंतरिक पुनर्गठन के फलस्वरूप ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गई जिनके कारण सल्तनत के क्षेत्रीय विस्तार की गतिविधि तीव्र हो गई।

यह विस्तार कई चरणों में सम्पन्न हुआ। पहले चरण में उन क्षेत्रों को दिल्ली के ~~अधीन~~ अधीन लाया गया जो दिल्ली से बहुत दूर नहीं थे, जैसे- गुजरात, राजस्थान

P.T.O.

Scanned with CamScanner

राजस्थान एवं मालवा। दूसरे चरण में आधुनिक महाराष्ट्र और दक्कन के राज्यों पर हमला किया गया एवं उन्हें दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार करने के लिए विवश किया गया। किन्तु इस चरण में उन राज्यों को दिल्ली सुल्तानों के प्रत्यक्ष शासन में लाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। तीसरा चरण अलाउद्दीन खिलजी के शासन के अंतिम वर्षों में आरंभ हुआ और ग्यासुद्दीन तुगलक के शासन काल (1320-24) ई में समाप्त हुआ। इस चरण में समस्त दक्कन पर केन्द्रिय नियंत्रण स्थापित हुआ। बंगाल को भी एक बार फिर दिल्ली के नियंत्रण में लाया गया।

इस प्रकार 30 वर्षों के संक्षिप्त काल में समस्त भारत दिल्ली सल्तनत के अधिकार क्षेत्र में ~~कल~~ आ चुका था।